

Depositor's Education and Awareness Program

The Reserve Bank of India (RBI) has initiated a Depositor's Education and Awareness Fund Scheme in accordance with the Banking Regulation Act, 1949, aimed at educating and raising awareness among depositors. As part of this initiative, a pilot program was sanctioned, and a one-day workshop was conducted in Maheshwar, a semi-urban town on the banks of the Narmada River in Madhya Pradesh, India. Maheshwar has historical significance and is known for its business activities.

The survey conducted in Maheshwar revealed several key findings about the banking and depositing habits of the residents. Out of the respondents, 98% had bank accounts, with 88% of them holding accounts in nationalized banks located in the local area. Additionally, 94% of account holders had linked their Aadhar to their bank accounts. Most respondents had educational qualifications ranging from high school to postgraduate degrees.

However, the survey also highlighted areas where further education and awareness were needed. For instance, 42% of respondents were aware of the nomination process in bank accounts, but only 24% had updated their nominations. Additionally, 76% of respondents were unaware of the rules related to closing and transferring bank accounts, indicating a need for clearer communication.

The objectives of the workshop were multi-faceted. It aimed to:

1. Address the problems faced by underprivileged depositors and customers, helping them safeguard their interests.
2. Understand the role of financial and banking institutions in creating customer awareness.
3. Examine the role of regulatory bodies and stakeholders in enhancing awareness and protecting depositors' interests.
4. Develop common communication strategies to educate depositors and customers.
5. Enhance measures to provide seamless and excellent customer services.
6. Instill the importance of empathy and understanding when dealing with customer issues.
7. Educate participants on financial planning, risk management, and tax-saving.
8. Raise awareness about available grievance redressal mechanisms within banks.

The workshop's management involved thorough preparation, coordination, and logistics. This included finalizing content, selecting key speakers, venue selection, participant selection, session planning, material preparation, logistical arrangements, and more.

The opening ceremony was marked by traditional lamp lighting and Saraswati Vandana, symbolizing the beginning of the workshop. The CEO of Priyasakhi Mahila Sangh, Ms. Arti Kushwah, delivered the welcome address, providing an overview of the organization's history, financial status, and the workshop's purpose.

Facilitators for the workshop included representatives from the RBI, local banks, consultants, and various organizations. These facilitators played a crucial role in imparting knowledge and facilitating discussions during the workshop.

The participants in the workshop came from diverse backgrounds, including private and government employees, small vendors, weavers, BCs (Business Correspondents), media personnel, NGO representatives, self-help group members, and housewives.

Overall, the workshop in Maheshwar was a comprehensive effort to educate and empower depositors, especially those from underprivileged backgrounds, on various aspects of banking and financial literacy. It aimed to bridge the knowledge gap and enhance customer satisfaction while promoting responsible banking practices.



बैंक में जागरूकता व शिक्षण-प्रशिक्षण संपन्न

महेश्वर। आपके खाते से बिना कोई जानकारी के कोई भी व्यक्ति पैसा नहीं निकाल सकता। जो बैंक में पैसा आपने जमा करा है वह आपकी मेहनत का पैसा है। कोई भी आपको किसी भी बैंक संबंधित जानकारी के लिए आपको फोन नहीं करता। यह बात आरबीआई भोपाल मैनेजर सत्येंद्र राजपूत ने प्रशिक्षण को संबोधित करते हुए कही। श्री राजपूत ने कहा की सुविधाएँ 96 खाद्य होती तो समस्याएँ भी 96 खादा बट्टेगी। आपनने सभी जागरूकता एवं जानकारी आवश्यक है अगर आपको बैंक संबंधी सभी जानकारी है तो आपके साथ कभी झग़ी नहीं हो सकेगी। श्री राजपूत ने कहा की किसी के भी प्रलोभन में आकर रापी का विवेक नहीं करे। किसी भी समस्या के समाधान के लिए धिकायत करे। प्रियसखी महिला संघ इंदौर एवं भारतीय रिजर्व बैंक के संयुक्त तत्वावधान एवं भारतीय रिजर्व बैंक के वित्तीय सहयोग से बैंक



में जमाकर्ताओं के लिए जागरूकता व शिक्षण - प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन शुरूवार को होटल रॉयल रेसीडेंसी में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आरबीआई भोपाल मैनेजर सत्येंद्र राजपूत उपस्थित रहे। कार्यक्रम प्रिय सखी महिला संघ इंदौर सचिव आरती कुशवाह, बैंक ऑफ इंडिया इंदौर

एलडीएम मुकेश भट्ट, नर्मदा ज़ाबुआ ग्रामीण बैंक रीजनल मैनेजर पी के गुप्त, बैंक ऑफ इंडिया सलाहकार डी एस यादव, वरिष्ठ उपायुक्त विकास अधिकारी आर एस खेडीयार मौजूद थे। कार्यक्रम में विवेक सलाहकार, वित्तीय साक्षरता सलाहकार एवं वित्तीय समावेशन प्रबंधक एवं अन्य राष्ट्रीयकृत व निजी बैंकों के विषय विवेकज्ञ ने उपस्थितों को बैंक खाते के लाभ व बैंक द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं व उत्पादों की जानकारी दी। साथ ही बैंक खाते के संचालन के संदर्भ में रखी जाने वाली विवेक सलाहकारों एवं सुरक्षा बिंदुओं के संबंध में जानकारी दी। कार्यक्रम में नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, डिजीटल जेपेन के माध्यमों को बख़ा देते हुए इस संबंध में रखी जाने वाली सावधानी आदि के संबंध में विषय विवेकज्ञों द्वारा प्रत्यक्ष में जीवंत प्रदर्शन के माध्यम से जानकारी दी।

बैंक में खाता खोलना ही सबकुछ नहीं है, जमाकर्ता सतत बैंक जाएं : सत्येंद्र सिंह



इंदौर. महिलाएं आर्थिक नियोजन के साथ परिवार के लिए कार्य करें, छोटी सी बचत करें, सतत बचाए, इससे बैंक आगे जाकर आपकी जरूरत पडने पर बडी मदद कर पाएगी. बैंक में खाता खोलना ही सबकुछ नहीं हैं. जमाकर्ता सतत बैंक जाएं चाहे वह छोटी बचत क्यों न हो. यह बात भारतीय रिजर्व बैंक के मैनेजर सत्येंद्र सिंह राजपूत ने कही. वे प्रिय सखी महिला संघ इंदौर के सहयोग से आरबीआई द्वारा इंदौर व खरगोन जिले के समूहों किसानों, महिलाओं व जमाकर्ताओं के सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे. आयोजन में इंदौर जिला अग्रणी बैंक मैनेजर मुकेश भट्ट, वित्तीय साक्षरता प्रभारी डीएस यादव, नर्मदा ज़ाबुआ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इंदौर के रीजनल मैनेजर प्रमोद उपाध्याय, प्रिय सखी महिला संघ सीईओ आरती कुशवाह आदि प्रमुख रूप से मौजूद थे. कार्यक्रम का संचालन आरती कुशवाह ने किया.